वहाबी मत का सत्य

लेखक :– आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी

किस्त : 3 सम्पादन : नूरे हिदायत फाउन्डेशन

जिसके बाद से सम्पूर्ण नज्द पर लड़ झगड़ कर आले सऊद (सऊद वंश) का राज्य हो गया। यहाँ तक कि 1206 में मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब की मृत्यु हो गई मगर आले सऊद के राजा उस मत के प्रचार–प्रसार में सेना की शक्ति के साथ मगन रहे।

मुहम्मद बिन सऊद के बाद उसका पुत्र अब्दुल अज़ीज़ हुआ। यह भी पास पड़ोस में अपनी फौजें भेजता रहा और अब्दुल अज़ीज़ के बाद सऊद हुआ। यह अपने पिता से भी अधिक कठोर था। उसने मुसलमानों को हज से रोक दिया और तुर्की के सुल्तान के खिलाफ़ विद्रोह किया। मगर इसके बाद यह सब गतिविधियाँ नज्द के इलाके तक ही सीमित थीं। यहाँ तक कि प्रथम विष्व युद्ध में तुर्की को जर्मनी का साथ देने के कारण अंग्रेजों के कोप का षिकार बनना पड़ा और जर्मनी की पराजय से शक्तिहीन भी हो गया तो पहले अंग्रेजों ने मक्का शरीफ के महापौर से तुर्की के खिलाफ़ स्वतन्त्रता का झण्डा उठवाया फिर उससे रूर्ष्ट होकर उस समय के सऊदी राजा से जिसका नाम भी अब्दुल अज़ीज़ था उसके द्वारा मक्का पर आक्रमण करा कर शरीफ़ को क़बरस (Cyprus) द्वीप में ले जाकर नज़रबन्द कर दिया और हिजाज़ पर भी आले सऊद का प्रभुत्व स्थापित करा दिया। अब तक सऊदी सम्राटों की राजधानी नज्द में है मगर वह मक्का व मदीना सहित समस्त हिज़ाज़ के सम्राट हैं।

पहला अध्याय

मुहम्मद ईब्ने अब्दुल वहाब के विचार अल्लाह के बारे में

इस बात से सब ही परिचित हैं कि वहाबी अधिकतर अपने धर्मगुरूओं की बातों में आकर खरी 'तौहीद' के मानने का दावा करने वाले हैं और अपने को छोड़ सब मुसलमानों को मुश्रिक समझते हैं। मगर जब खुद इब्ने अब्दुल वहाब की किताबों को देखा जाए तो यह पता चलता है कि यह आदमी अल्लाह के बारे में अपने पेषवा इब्ने तैयमिया ही के विचारों में आस्था रखता है जिससे अल्लाह की शान व प्रभुता घायल होती है और उसका एक होना जो सच्ची तौहीद है समाप्त होती है। वह इस प्रकार कि कुरआन मजीद की वे आयतें जिनके कुछ शब्दों से शरीर का अर्थ पैदा होता हैं जैसे कि "यदाहु मब्सूतनान" जिसका अर्थ हुआ कि "उसके दोनों हाथ खुले हुए है" और "अलल अर्ष शिस्तवा" जिसका अर्थ हुआ कि वह अर्ष पर सीधा होकर बैठा है। इनमें सत्य उलमा का यह मानना है कि उनका यह अर्थ अल्लाह की शान के खिलाफ़ है और अक़्ल में भी नहीं आता। अतः उनका ऐसा अर्थ समझना चाहिए जिसका अरब के मुहावरों में स्थान भी हो और वह अल्लाह की शान के खिलाफ़ भी ना हों। जैसे "यद" का अर्थ प्रभुता और "अस्तवा" का अर्थ शक्ति मगर इब्ने तैयमिया और उनके माननेवाले जिनके गुरू अब अंत में शैख ईब्ने अब्दुल वहाब हुए, इन सब शब्दों को उनके ऊपरी अर्थों में मानते हैं और इनमें से किसी में भी बदलाव के खिलाफ़ हैं। इस प्रकार उनका विचार यह है कि

वह वास्तव में अर्ष (आसन) पर बैठा है उसके हाथ हैं, पैर हैं, पहलू है, आँखें हैं, चेहरा है, ज़बान है, जान है और यह सब चीजें सच में हैं। वह आवाज़ के साथ बात करता है और चढ़ता उतरता हँसता रोता है।

यह सब उसके साकार होने की बात है जिसके कुफ़्र होने पर सब मुसलमान सहमत हैं मगर वहाबियों के उलमा की किताबें इन बातों से भरी पड़ी हैं। अतः स्वयं इब्ने अब्दुल वहाब की किताब है "अल तौहीदुल लज़ी हुव हक़्कुललाहि अलल अबीद" इसमें इस आयत के बारे में लिखा है कि "हत्ता इज़ा फुज़्ज़ि–अ अन् कूलूबिहिम क़ालू माज़ा क़ा–ल रब्बुकुम क़ालुल् हक–क़ व हुवल अलीयुलकबीर् (सूरा सबा 34 आयत 23) लिखा हैः "बीसवीं बात इसमें गुण (अर्थात ज़बान, आवाज़ व शब्दों द्वारा बोलने) का सबूत है। फ़िरका अषअरी (मुसलमानों का एक बहुत बड़ा गिरोह) जो तातील (अर्थात् इस प्रकार की बातों को नहीं मानता) का माननेवाला है, उनके खिलाफ़ है।"

इस संदर्भ में व्याख्या कर्ता ने एक फुटनोट में लिखा है कि "यह अशअरी गिरोह अबुल हसन अषअरी से सम्बन्ध रखते हैं और इस गिरोह ने अधिकतर इन बातों का खण्डन किया है जैसे अल्लाह का ऊँचा होना और अपनी सारी बनाई हुई चीजों से अलग होकर अर्ष पर बैठना और उसका प्यार करना अपने भक्तों से, और उसकी दया उन पर, और उसका सहमत होना उनसे और उसका क्रोध आदि यह खण्डन करना है उनका जो चीजें रसूलल्लाह[स] और उनके असहाब (सहाबियों) और दूसरे नेक लोगों से पता चली हैं।"

इसके बाद किताब की समाप्ति पर एक भाग है इस मतलब पर उन हदीसों पर जिनसे उनके गिरोह की सत्यता नज़र आती है। अतः लिखा है कि "यह भाग उन हदीसों में है जो अल्लाह के इस बयान के बारे में है कि उन्होंने अल्लाह की असली शान को नहीं समझा है और सम्पूर्ण धरती प्रलय के दिन उसकी मुठ्ठी में होगी।"

इब्ने मसऊद की रिवायत है कि एक यहूदी विद्वान रसूलल्लाह[स] के पास आया और कहा कि "ऐ मुहम्मद[स] हम अपनी किताबों में ऐसा पाते है कि अल्लाह सब आसमानों को एक अंगुली में लेगा और धरतियों को एक अंगुली में और पेड़ पौधों को एक अंगुली में और जल को एक अंगुली में और धरती को एक अंगुली में और बाकी सब को एक अंगुली में और उन सब को लेकर कहेगा कि मैं सच्चा बादषाह हूँ।"

इस पर पैगम्बर[स] हँसने लगे इस प्रकार कि दाढ़ें तक आपकी दिखाई देने लगीं। इस यहूदी की बात की सत्यता में आपने यह आयत पढ़ी उन्होंने अल्लाह की शान को नहीं पहचाना जो उसका हक़ है और क़यामत के दिन पूरी ज़मीन अल्लाह के हाथों पर होगी। (सूरा ज़ुमर आयत 67 समाप्ति तक)।

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि पहाड़ और पौधे एक अंगुली में, फिर वह इन सबको हिला कर कहेगा मैं बादशाह हूँ, मैं अल्लाह हूँ। बूखारी की एक रिवायत में है कि आसमानों को एक अंगुली पर जल और धरतियों को एक अंगुली पर और सब चीजों को एक अंगुली पर। इसे दोनों (बुखारी, मुस्लिम) ने लिखा है और मुस्लिम की रिवायत इब्ने उमर से यह है कि अल्लाह आसमानों को प्रलय के दिन लपेट देगा–फिर उन्हें अपने बायें हाथ में लेगा। फिर वही कहेगा कि मैं बादशाह हूँ। कहाँ हैं बाग़ी लोग? कहाँ है अपनी बड़ाई दिखाने वाले? और इब्ने अब्बास से रिवायत है कि सातों आसमान और सातों धरतियाँ अल्लाह की हथेली पर ऐसी होंगी जैसे तुम में से किसी के हाथ में राई का दाना, और इब्ने जरीर का बयान है कि मुझसे युनुस बिन वहब ने बयान किया वह कहते हैं कि अबू ज़ैद ने कहा कि मुझसे मेरे पिता ने कहा कि "रसूल अल्लाह[स] ने फ़रमाया कि सातों आसमान

कुर्सी में बस ऐसे है जैसे सात दिरहम (चाँदी के सिक्के) किसी ढाल में और अबू ज़ैद ने यह भी कहा कि मैंने पैग़म्बर[स] को यह भी कहते हुए सुना कि कुर्सी अर्ष के अन्दर ऐसी है जैसे लोहे का एक छल्ला एक बहुत बड़े जंगल के पीछे लुढ़क रहा हो। और इब्ने मसऊद से रिवायत है कि दुनिया के आसमान आसैर उससे मिले हुए आसमान के बीच पाँच सौ वर्ष की दूरी है। इस तरह हर आसमान की दूसरे आसमान से पाँच सौ वर्ष की दूरी है और फिर सातों आसमान और कुर्सी के बीच पाँच सौ वर्ष की दूरी है और फिर कुर्सी और पानी के बीच पाँच सौ वर्ष की दूरी है और अर्ष पानी के ऊपर है और अल्लाह अर्ष पर है फिर भी तुम्हारे कार्यो में से कुछ भी उससे छिपा हुआ नहीं रहता। इसकी इब्ने महदी ने रिवायत की है जमाद बिन मुसैलमा से उन्होंने आसिम से, उन्होंने ज़र से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मसऊद से और उसी से मिलती जुलती रिवायत की हैं, मसऊदी ने आसिम से उन्होंने अबूवाएल से उन्होंने अब्दुल्लाह से। हाफ़िज़ ज़हबी ने कहा है कि यह हदीस कई प्रकार से पहुँची है और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तालिब (रज़ी अल्लाहो अनहो) से रिवायत है कि रसूलल्लाह[स] ने कहा कि "तुम जानते हो कि आकाष और धरती के बीच कितनी दूरी है? लोगों ने कहा कि अल्लाह और रसूल[स] अधिक जानते हैं। कहा कि पाँच सौ वर्ष की और हर आकाष की दूसरे आकाष से पाँच सौ वर्ष की दूरी है और हर आकाष की लम्बाई पाँच सौ वर्ष की दूरी के बराबर है और सातों आकाषों और अर्ष के बीच एक समुद्र है और उसके नीचे और सतह के बीच की दूरी वैसी ही है जैसे आकाष और धरती के बीच और अल्लाह तआला उसके ऊपर है और फिर भी उस पर आदमियों की कोई बात छिपी हुई नहीं है। इसे अबूदाऊद ने लिखा है और इसमें कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं:

पहले इस आयत की तफ़सीर कि "धरती सब उसकी मुठ्ठी में होगी प्रलय (क़यामत) के दिन।" दूसरे यह कि यह और इस प्रकार की जानकारियाँ यहूदियों के यहाँ भी थीं जो हज़रत के समय में भी थे न उन्होंने उन्हें गलत समझा और न ही कुछ अर्थ निकाले।

तीसरे यह कि जब उस यहूदी आलिम ने पैग़म्बर के सामने इसका वर्णन किया तो आपने उसकी बात को सत्य बतलाया और उसकी बात की सत्यता में कुरआन की आयत उतरी।

चौथे यहूदी आलिम के इस बड़े इल्म को बताने पर पैग़म्बरे[स] खुदा का हँसना।

पाँचवा इस बात का साफ होना कि उसके दोनों हाथ हैं और आकाष दायें हाथ में होगा और ध ारती बायें हाथ में।

महमूद शंकरी आलूसी जो स्वयं वहाबी मत के थे "तारीखे नज्द" में नज्द वालों के धर्म और उनके विचार व कार्यो के बारे में लिखते हैं कि वह गुण अर्थात् हाथ पाँव मुंह आदि वाली आयतों और हदीसों को उनके ऊपरी अर्थ पर लेते हैं और उसके अर्थ को अल्लाह को सौपते हैं। अगर वह इस अर्थ को अल्लाह को सौंपते तो फिर इसके ऊपरी अर्थ को रखने का फैसला न करते।

ग़ौर करने के बाद हर सूझबूझ वाला महसूस कर सकता है कि इन शब्दों के ऊपरी अर्थ को मानना इस्लामी षिक्षा के खिलाफ़ है क्योंकि इससे लगता है कि अल्लाह शरीर रखता है और उसके लिए शरीर को न मानने पर सभी मुसलमान एक राय रखते हैं। क्योंकि यह तौहीद के नियम के खिलाफ़ है। खुदा वालों के प्रमुख हज़रत अली[अ] नहजुल बलाग़ा के पहले ही खुत्बे में कहते हैं कि:

"तौहीद का पूरा होना यह है कि उसकी ज़ात से गुणों का इन्कार किया जाए इसलिए कि गुण और गुणवाला दो अलग चीजें हैं। तो जिसने उसके गुण माने उसने उसे एक से ज़्यादा मान लिया और जिसने उसे एक से ज़्यादा माना उसने उसके अनेक भाग मान लिए।"

अगर अल्लाह के लिए भाग मान लिए जाएं तो

यह भाग सदैव से होंगे या फिर बाद में तैयार हुए होंगे। अगर बाद में बना माना जाए तो फिर अल्लाह भी बाद में बना माना जाएगा। क्योंकि बाद में बनी चीज़ों से बनी चीज़ बाद मे बनी जाएगी और सदैव से मानें तो फिर अल्लाह के साथ सदैव से होने में दूसरे भी मिल जाएगे जो षिर्क है और फिर इसके अलावा अल्लाह का जरूरत का होना याने उसमें किसी बात की कमी का होना साबित होगा।

रह गई वो आयतें और हदीसें जिनमें इस गलत विचार को सही बताया गया है तो हर भाषा में और अरबी में तो एक–एक
शब्द के कई–कई अर्थ होते हैं। इसलिए हर शब्द का वह अर्थ लिया जाए जो कुरान व हदीस और अक़्ल से सही हो जैसे "इस्तवा" शब्द का ऊपरी अर्थ सीधे बैठने का है मगर यहाँ मौक़े के हिसाब से इसका सही अर्थ प्रभुत्व के साथ सदैव रहना है जो बिल्कुल मुहावरे के नियम के मुताबिक़ है और खुदा की शान वैभव के अनुरुप है। जिसकी तरह के मुहावरे अरबी भाषा में बहुत हैं।

वह यहूदी आलिम वाली रवायत जो बयान की गई है वास्तव में इस विचार के ग़लत होने की दलील है। उस यहूदी की बात पर रसूल[स] का हँसने के साथ यह वाक्य कि उस यहूदी की बात के सत्यापन में यह न रसूल[स] का कथन है न काम जिसे हदीस का अंश समझा जाय बल्कि इस रिवायत के बयान करने वाले का विचार उस यहूदी की ना समझी की दलील है। बुद्धिमत्ता यह है कि आप[स] उस यहूदी की बेवकूफी पर इतने ज़ोर से हँसे और उसकी काट में आपने आयत इसलिए पढ़ी ताकि बताएं कि लोगों ने अल्लाह की सही शान को नहीं पहचाना।

सारी सृष्टि प्रलय/कयामत के दिन उसके पूरे कन्ट्रोल में होगी, न यह कि एक एक चीज़ को अपनी एक एक अंगुली पर लेकर उसे घुमाने का करतब दिखाये।

इन सब विचारों को इब्ने अब्दुल वहाब ने अपने गुरू अबुल अब्बास अहमद इब्ने तैमिया हरीफी (मृ. 828 हि0) से लिया है जिन्होंने सबसे पहले इन बातों पर ज़ोर दिया ओर इस बारे में पूरे–पूरे पुस्तिकाएँ रिसाले लिखे जैसे 'अकीद–ए–हमविय्या' और वासितिय्या आदि और फिर उनके शागिर्द इब्ने क़य्यूम आदि उन्हीं के पैरों पर चले। इस्लामी उलमा ने उनके कुफ़्र का फ़तवा दिया और पैर रख कर कुछ ने उनकी हत्या जायज़ होने का हुक्म दिया फिर भी वो एक लम्बी अवधि तक क़ैद में रहे।

इस स्थान पर यह आवष्यक है कि वहाबी विचारों के जनक इब्ने तैयमिया के बारे में इस्लामी उलमा के विचार लिख दिए जाएं ताकि मालूम हो कि जब पेषवा की यह हालत है तो मानने वालों की क्या हालत होगी।

अल्लामा इब्ने हजर मक्की ने अपनी किताब "जौहरु मुनज़्ज़मा फ़ीज़ियारते क़ब्रिन्नबी इल मुकर्रम" में लिखा है कि: "इब्ने तैयमिया की ग़लती ऐसी है जिसका इलाज नहीं हो सकता और ऐसी मुसीबत है जो समाप्त होने वाली नहीं है। इस व्यक्ति ने अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं के तहत इजतेहाद का नारा लगाया और दीन के पेषवाओं की मुख़ालिफ़त की यहाँ तक कि खुलफाए राषिदीन पर घटिया ढंग की आपत्तियाँ कीं। इसके अतिरिक्त अल्लाहतआला की शान में भी गुस्ताख़ियाँ की और मिम्बर के ऊपर से जनता के सामने साफ़–साफ़ अल्लाह के जिस्म होने और किसी एक दिषा में होने का एलान किया और जो इनका इनकार करे उसे गुमराह (पठभ्रष्ट) बताया। यहाँ तक कि सभी उलमा ने एकमत होकर बादषाह को उसके क़त्ल या क़ैद करने पर मजबूर किया, अतः उसने उसे मरते दम तक क़ैद रखा। इसके बाद यह आग ज़रा बुझी सी और अंधेरे छँट गये मगर इनके मानने वाले कभी न कभी पैदा होते रहे लेकिन ये लोग हमेषा ज़लील और अपमानित और खुदा के प्रकोप में घिरे रहे।

उन्होंने अपनी दूसरी किताब "अषरफुल वसाइल इला फ़हमिष्षमाईल" में लिखा हैः "अम्मामे (पगडी)को दोनो कान्धों के बीच लटकाने के बारे में इब्ने कामिल ने एक अजीब बात कही हैऔर वह यह है कि जब आप[सा०] ने अपने पालन हार को अपना हाथ उनके कान्धों के बीच रखे हुए देखा तो उस जगह को उत्कृष्टता दी। इराकी ने कहा कि हमें इसका कोई मूल नहीं मिला। मैं कहता हूँ कि यह दोनों (इब्ने तैमिया इब्ने कैयिम) के दूसरे विचारों की तरह हैं जो उनकी उस धारणा पर आधारित है जिसके साबित करने में बहुत लम्बी बात से काम लिया है और अहले सुन्नत पर बहुत बुरा भला कहा है कि वे इसे नहीं मानते और वह अल्लाह के लिए दिशा और शरीर का प्रस्ताव करना है। (जो उन अन्यायियों के विचारों में पडे हैं।) और उन के यहाँ इतनी ख़राब और बदएतिक़ादी (दुर्विष्वास) की बातें हैं जिनसे कानों को तकलीफ़ होती है। यह सब ग़लत, झूठ और गुमराही और झूटे आरोपी की बातें हैं, अल्लाह उनका बुरा करे और जो उन की बातों को माने उनका बुरा करे लेकिन इमाम अहमद बिन हम्बल और उनके पन्थ दूसरे बुजुर्ग इस बुराई के दाग़ से दूर हैंऔर क्यों कर एसा न हो कि यह बहुत सों के विचार में कुफ्ऱ है।"

हमारे लखनऊ के मौलाना अब्दुल हलीम फ़िरंगी महली अपनी किताब "हिल्लुल मआक़िद हाषियए शरहे अक़ाएद" में लिखते हैं किः तक़ीउद्दीन इब्ने तैमिया हम्बली आदमी था मगर हद से आगे बढ़ गया था और ऐसी बातों को साबित करने पर उतारु हुआ जो अल्लाह की अज़मत, महानता व शान के ख़िलाफ़ हैं। उसने अल्लाह के लिए दिशा और शरीर को माना और हज़रत मोहम्मद[स] के लिए कहा कि वह माल से मुहब्बत रखते थे और हज़रत अली[अ०] को कहा कि उनका ईमान ठीक नहीं था इसलिए कि बचपन में ईमान लाए थे। पैग़म्बर के अहलेबैत के लिए भी ऐसी बातें कहीं जो एक मोमिन (ईमान वाला) अपनी ज़बान पर नहीं ला सकता जब कि सही हदीसें उनकी सराहना में सहीह किताबों में आयी है। इसीलिए उलमा की एक बैठक में जिसमें क़ाज़ीउल कुज़ात (महा धर्म न्यायधीश) ज़ैनुद्दीन मालिकी भी थे इब्ने तैयमिया को हाज़िर किया गया और लम्बी बात चीत के बाद इब्ने तैमियाको क़ैद करने का हुक्म दिया गया। यह 705 हिजरी की घटना है। फिर दमिष्क आदि में ऐलान हुआ कि जो भी इब्ने तैमिया के विचारों को मानता हो उसकी जान व माल दूसरों पर हलाल है। इसका बयान ''मिर्अतुज़िनान शाफ़ई'' में है। फिर उसने 707 हिजरी में तौबा की और कैद से छूटा और यह वादा भी किया कि मैं "अषअरी" विचारधारा का पाबंद (प्रतिबद्ध) रहूँगा। उसके बाद फिर इसने अपने वचन को तोड़ा और फिर क़ैद हुआ फिर तौबा की और शाम में रहा और बहुत सी घटनाएँ घटी जो इतिहास की किताबों में मौजूद हैं।"

इब्ने तैमिया के बारे में सारे उलमा का यही मत है कि चूँकि उसने खुदा को जिस्म समझा इसलिए स्थान का भी इक़रार किया और कहा कि अर्ष ही उसका स्थान/आसन है और चूँकि खुदा की ज़ात हमेषा से है और बाक़ी चीज़ें समाप्त होने वाली हैं इसलिए उसने कहा कि अर्ष तो हमेषा से है मगर उसकी हालतें बदलती रहती हैं।

इब्ने हजर मक्की ने 'दुररुकामिना' भाग.1 में और ज़हबी ने अपने इतिहास में उसके कथनों और हालात का बयान किया है। यह बयान तो बीच में अधीनतयः आ गया। मूल मतलब यह है कि इब्ने तैमिया ने खुदा की शारिक्ता को अपनाया अतः कहा कि उसके लिए स्थान है इस लिए कि हर शरीर के लिए स्थान ज़रुरी है। और क्यों कि कुरान में है कि वह अर्श पर सीधा बैठा है कि अर्श ही उसका स्थान/ठिकाना है। और फिर खुदा सदा से है। (अनादी है) और विश्व के सार भाग

मिटने वाले (घाटित) है इसलिए कीना पड़ा कि अर्श अनादि लेकिन उसकी अनन्त चीज़े एक के बाद एक अस्तित्व में आती रहती है तो स्थान के होने के गुण में खुदा कदीम है परन्तु स्थान के निर्धारण में घटित है।

याफई की मिरातुलजिलान में इब्ने तैमिया के बवाल/आपदा के बारे में है कि मिस्र में जो उन पर आरोप लगा ये है कि वो कहते है कि खुदा सचमुच अर्श पर बैठा है और वो वर्णों और आवाज़ से बोलता है और इसी के बाद दमिश्क आदि से एलान किया गया किजो इब्ने तैमिया के विश्वास पर हो उसका जान माल (ले लेना) समुचित है।

अबुलफ़िदा ने अपने इतिहास में 705हि0 की घटनाओं में लिखा कि तक़ीउद्दीन अहमद इब्ने तैमिया को दमिश्क से मिस्र बुलाया गया और तय हुआ कि वाद विवाद के बाद तैमिया को उसके बुरे अक़ीदों के कारण जेल में डाला दिया जाय। इसलिए कि वह खुदा के लिए जिस्म होने को मानता है।

इसी प्रकार कुछ इष्तेहार (विज्ञापन) भी बादषाह की ओर से प्रकाशित करवाए गये जिनका निचोड़ यह था कि इस अभागे व्यक्ति इब्ने तैमिया ने अपनी लेखनी की ज़बान बढ़ा रखी है और खुदा के गुणों के मसलों में विवाद खड़ा कर रखा है और अपनी बातों में एसी गलत व्याख्या की ऐसी बातें करता है जिन पर सहाबियों, ताबेईन ने चुप्पी साधी थी और पिठले नेक सदाचारियों के लिए अमान्य थीं और वह विचार प्रकट किये जो कि इस्लाम के अगुवाओं नें गलत बताया है। और जिनके विपक्ष में इस्लाम के सभी उलमा एक मत है और देश के कोनो में एसे फ़तवों का प्रसार प्रकाशन हो रहा है जिनसे जन साधारण बहेक रहे है। और इस बारे में उसने मिस्र के उलमा और शाम व मिस्र के फ़क़ीहों (घर्म विधि शास्त्रियों) का विरोध किया है। हम तक यह समाचार पहुँचे है और ज्ञात हुआ है कि एक गुट उसका अनुयायी होगया है ये लोग खुदा के बारे में जिस्म और आवाज़ रखने का विष्वास रखते हैं इसीलिए हम उनके ख़िलाफ़ खड़े होने को मजबूर हुए। यह ज्ञात Charector बहुत लम्बा है जिसके कुछ वाक्यों का आश्य लिखा गया।

इन सबसे मालूम हुआ कि यदि कोई खुदा के लिए जिस्म रखने का विचार रखे तो ऐसा व्यक्ति सभी उलमाए इस्लाम के अनुसार काफ़िर है। अब इससे इब्ने अब्दुल वहाब और उनके अनुयायियों के बारे में आसानी से समझा जा सकता है कि वे क्या हैं।

जो कुछ यहाँ पहले हमने दर्ज किया वह अहलेसुन्नत उलमा के विचार थे, षियों के विचार शरहे लुमआ, 'रियाजुल मसाइल', और जवाहिरूल कलाम आदि किताबों में देखे जा सकते हैं। इस प्रकार इन लोगों के काफ़िर होने पर पूरी उम्मत (मुस्लिम समुदाय) का एकमत होना साबित हो जाता है।

दूसरा अध्याय

वहाबियों के विचार नबी-ए-करीम के बारे में।

इब्ने अब्दुल वहाब और उनके मानने वाले यह विचार रखते हैं कि रसूले खुदा[स] दुनिया से चले जाने के बाद अपनी क़ब्र में और लोगों की तरह हो गए हैं कि न सुनते हैं और जवाब न दे सकते हैं। ना आप[स] को इतना अधिकार है कि अपनी इच्छा से पूरब पष्चिम में जहाँ चाहें चले जाएं। इसके अलावा आपकी कब्र शरीफ की ज़ियारत के लिए यात्रा करना उनके विचार में हराम है और आप[स] के माध्यम (वसीले) से दुआ मांगना और आपकी क़ब्र के पास दुआ मांगना भी उनके विचारों में जायज़ (मान्य) नहीं है और या रसूल अल्लाह कह कर पुकारना षिर्क है। जो आपके दुनिया से चले जाने के बाद आपसे मुख़ातिब हो बुला के कोई चीज मागें वह भी षिर्क है।

उसको कत्ल करना हलाल (ठीक) है इसी प्रकार उसका माल लूटना भी हलाल है। इस को सही बताने के लिए वह आयतों व हदीसों से दावा करते हैं और उन्हें सबूत बनाते हैं जिनसे वास्तव में इस का प्रमाण नहीं बनते। और सब मुसलमान एकमत हैं कि हज़रत[स०] मृत्यु के बाद भी जीवित हैं न ऐसा जीवन जिसका वर्णन शहीदों के लिए कुरान से साबित है बल्कि इससे भी कई श्रेणी ज्यादा भरपूर जीवन।

यह विचार कि हज़रत[स] की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत के लिए यात्रा करना मना है इसकी बुनियाद एक हदीस पर है जो अहले सुन्नत के यहाँ आई है कि हज़रत[स] ने फ़रमाया कि केवल तीन मस्जिदों के अलावा किसी जगह यात्रा करके जाना हलाल नहीं है। इसे जो अपने मतलब के लिए दलील बनाकर सामने लाया जाता ग़लत है, इसलिए कि जो थोड़ा भी अरबी भाषा का ज्ञान रखता है वह समझ सकता है इस हदीस का मतलब यह है कि मस्जिदों में केवल तीन मस्जिदें हैं कि जिनके लिए विषेशकर यात्रा करना चाहिए, क्यों कि खुली बात कि जो वस्तु 'नहीं' से अलग की जाती है वह उसी प्रकार की होना चाहिए जिससे अलग की जाती है (यहाँ प्रकार 'मस्जिद' है अर्थात उन हदीस के अनुसार तीन उन तीन मस्जिदों को छोड़ कर कहीं किसी और मस्जिद की खास कर यात्रा नहीं करना चाहिए) जैसे कोई कहे कि मैंने अपनी पूरी आयु में बस वह मस्जिद देखी है उसके सिवा कोई नहीं तो हर व्यक्ति यह ही समझेगा कि कोई और मस्जिद नहीं देखी यह नहीं कि कोई और दूसरा भवन व दूसरी चीज़ नहीं देखी।

इसी प्रकार इसके सिवा तीन मस्जिदों के और किसी के लिए यात्रा न की जाए यह केवल मस्जिदों के लिए है इसलिए यह अर्थ निकालना ठीक नहीं कि रसूल[स] की पाक कब्र के लिए यात्रा करना ठीक नहीं है। वरना फिर एक नगर से दूसरे नगर व्यापार आदि के लिए भी यात्रा ठीक नहीं होना चाहिए जिसका गलत होना साफ़ है कई बार स्वयं रसूल[स] ने व्यापार के लिए शाम (सीरिया) की यात्रा की और इसका सबूत मिलता है इमाम अहमद बिन हम्बल की रिवायत से जिसका अर्थ यह है कि "किसी मस्जिद की तरफ जहाँ अल्लाह का ज़िक्र (याद) होता है यात्रा करके जाना ठीक नहीं होगा केवल तीन मस्जिदों को छोड़ के। इसे सय्यद मुस्तफ़ा नूरूद्दीन हुसैनी ने अपनी किताब "खुलासातुल मिक़ाल फीषद्दिररिजाल" में लिखा है और सत्य यह है कि हदीस एक दूसरे की व्याख्या करती हैं।

आम हुक्म का पता शर्त वाले हुक्म से चलता है। समस्त मुसलमान और हर काल के उलमा रसूल[स] के रौज़े (क़ब्र/समाधि) की ज़ियारत के लिए यात्रा करते रहे हैं और किसी ने कभी इस पर कोई आपत्ति नहीं की। इससे सब मुसलमानों का इजमा (एक राय होना) साबित होता है और जिन लोगों ने बाद में इस के विरोध का रास्ता अपनाया वह गिरोह से निकल गए और एकमत रास्ते से भटक गए।

बहुत सी हदीसों से भी ज़ियारत के लिए यात्रा का सबूत मिलता है जैसा कि अली बिन बुरहानुद्दीन शाफ़ई की किताब "इन्सानुलउयून" में है कि

"जब जनाबे रसूले खुदा[स] की वफ़ात हो गई तो बिलाल[अ] शाम की तरफ चले गए और कहा कि अब रसूल[स] के बाद मदीने की सूरत नहीं देखूंगा। वर्षो तक वहाँ रहे मगर एक रात सपने में रसूल[स] को देखा कि फरमाते हैं

ऐ बिलाल तुमने हमारा पड़ोस छोड़ दिया और शाम में रहने लगे तो क्या अब हमारी ज़ियारत (दर्शन) के लिए भी नहीं आते?

बस जब निद्रा भंग हुई तो उन्होंने यात्रा की तैयारी की और मदीना आए और क़ब्र की ज़ियारत के लिए उपस्थिति हुए।"

जारी ....